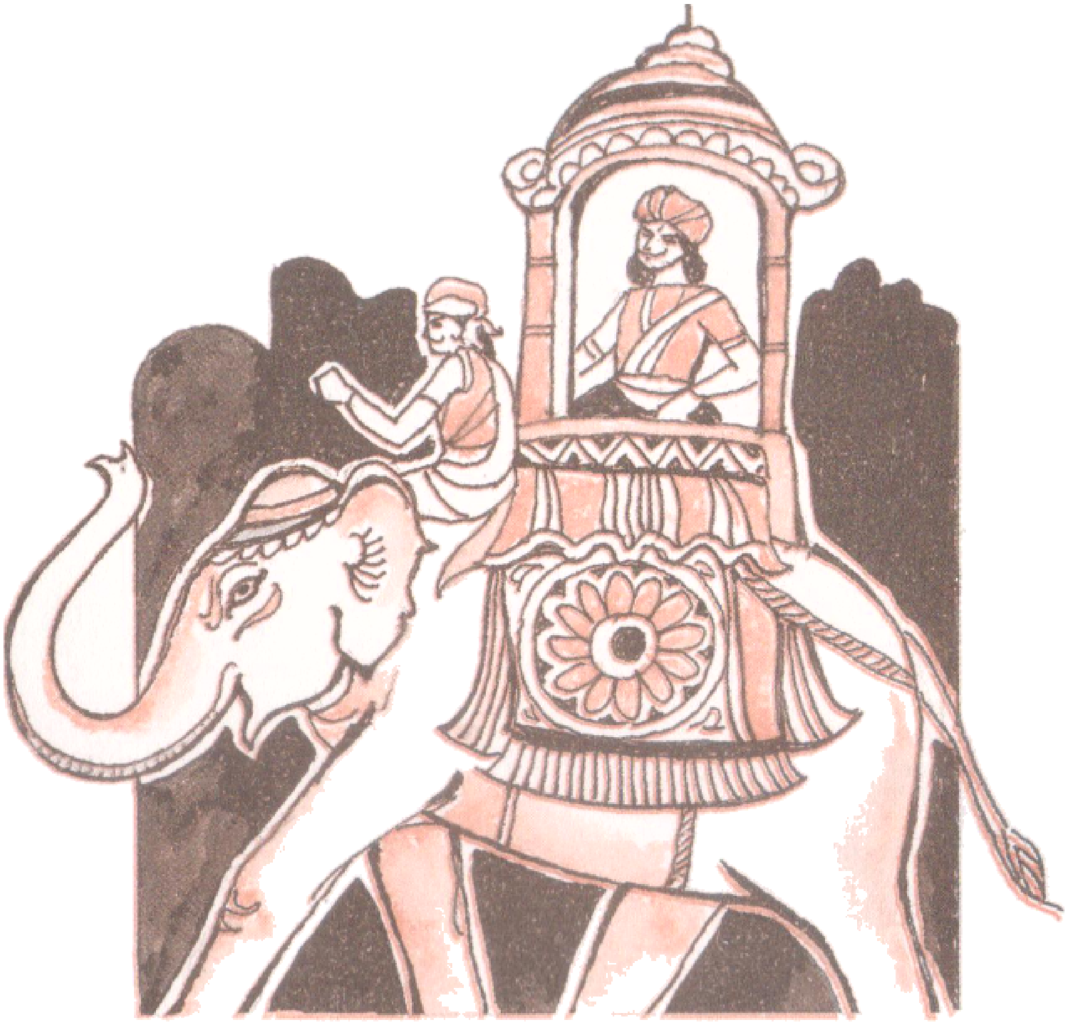
उत्तर प्रदेश की लोककथाएं





उत्तर प्रदेश की लोककथाएं

सावित्री देवी वर्मा

राजपाल

मूल्य : तीस रुपये (Rs. 30.00)

संस्करण : 2008 © राजपाल एण्ड सन्ज़

ISBN : 978-81-7028-332-4

UTTAR PRADESH KI LOK KATHAYEN (Stories)
by Savitri Devi Verma

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110 006

Website : www.rajpalsons.com

E-mail : mail@rajpalsons.com



क्रम

सात सितारे

बहुत दिनों की बात है, एक गांव में एक सयाना रहता था। उसके छः बेटे थे। वह उनको पहला बेटा, दूसरा बेटा, तीसरा बेटा, आदि नामों से बुलाता था, क्योंकि उसने उनका नाम ही नहीं रखा था। जब वे कुछ बड़े हुए तो बाप ने कहा, "बच्चो, तुम लोग खा-पीकर, खेलकूद कर और सोकर ही दिन काट देते हो, तुम्हें कोई उपयोगी धंधा सीखना चाहिए।"

लड़कों ने सोचा, बापू ठीक ही कहता है। कभी-न-कभी तो हमें अपने पांवों पर खड़ा होना ही होगा। इसलिए अभी बापू के होते हुए हमें आत्मनिर्भर बन जाना चाहिए। यह निश्चय करके वे अपना-अपना झोला संभालकर घर से चल दिए। गांव से निकल कर एक चौराहा आया, जहां तीन सड़कें आकर इस प्रकार जुड़ती थीं कि छह रास्ते बनते थे। किस रास्ते से चलें, जब इस बात पर छहों भाई एक मत नहीं हो सके, तो छहों भाई विभिन्न रास्ते पकड़ कर अलग-अलग रास्ते से चल दिए और उन्होंने यह तय किया कि छः महीने बाद फिर यहीं मिलेंगे!

छः महीने बीत गए। सब भाई अपनी-अपनी रुचि का

घंधा सीखकर फिर उसी चौरस्ते पर मिल गए और गप्प-शप्प करते हुए अपने घर की ओर चल दिए। उन्हें देखकर बापू ने कहा, ''बच्चो, तुम लोगों को खुश और सेहतमंद देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। अब सुनाओ कि तुम लोग क्या-क्या हुनर सीख आए हो।''

बड़े बेटे ने कहा, ''मैंने ऐसे जहाज़ बनाने सीखे हैं जो बिना हवा और पाल के चलते हैं।''

''यह तो बहुत अच्छा हुनर है।''

दूसरे ने कहा, ''मैंने जहाज़ चलाने की कला सीखी है। न केवल समुद्र में बल्कि धरती पर भी मैं बड़े-से-बड़ा जहाज़ चला सकता हूं।''

''यह भी खूब बढ़िया धंधा है।''

तीसरा बोला, ''मैंने अपनी श्रवण-शक्ति का विकास किया है। यहां बैठा हुआ मैं बता सकता हूं कि दुनिया में किस जगह क्या चर्चा हो रही है।''

चौथे ने कहा, ''मैंने निशानेबाज़ी में कमाल हासिल किया है। मैं राई के दाने तक को अपने तीर से बेध सकता हूं।''

''अच्छा, ऐसी कमाल की निशानेबाज़ी की तो मैंने कभी चर्चा नहीं सुनी।''

पांचवां लड़का बोला, ''मैं भी किसी से पीछे नहीं रहा। मैंने पहाड़ों पर चढ़ने में कमाल हासिल किया है। मैं सीधी दीवाल पर भी मक्खी की तरह सीधा चल सकता हूं।''

''शाबाश! यह तो एक अनोखी बात सुनाई।''

छठा लड़का बोला, ''मैंने चोरी करने में कमाल हासिल किया है।''

सबकी बात सुनकर बाप ने अपना निर्णय देते हुए कहा,



"तुम सबने कुछ-न-कुछ हुनर सीखा। पर मेरी राय में इनसे अपनी रोज़ी-रोटी तुम नहीं कमा सकते। जब चारों ओर हवा ही हवा है और उसके सहारे पाल जहाज़ को ले जा सकते हैं, तो बिना पाल के जहाज़ चलाने का हुनर किस काम आएगा? और दूसरे बेटे, धरती पर जहाज़ चलाने में क्या तुक है? समुद्र धरती के चारों ओर फैला हुआ है। जहाज़ों के लिए काफ़ी जगह है। और तीसरे बेटे, तुम्हें दूसरे देशों की बातें सुनने की क्या पड़ी है? अपने ही गांव में काफ़ी बातें हैं। और चौथे बेटे, तुम्हें सरसों को तीर से फोड़ने की क्या ज़रूरत है? तीर से हिरन का शिकार करो ताकि खाने को भी कुछ मिल सके। पांचवें बेटे, तुम्हें दीवारों पर चढ़ने की ऐसी क्या ज़रूरत आ पड़ी है? सपाट धरती इतनी है, उस पर ही चलो। और छठे बेटे, इस दुनिया में नेक लोग बसते हैं, तुम्हें चोर बनने की क्या ज़रूरत आ पड़ी? यह कोई ऐसा धंधा नहीं है जिससे मान मिले।"

बाप की बात सुनकर सब बेटे बड़े निराश हुए। बड़े बेटे ने हिम्मत करके कहा, "बापूजी, कभी ऐसा मौका ज़रूर आएगा जब हमारा हुनर भी काम आएगा।"

और सचमुच में बहुत जल्दी ऐसा मौका आ ही गया। उस देश की सुंदर राजकुमारी को एक राक्षस उठाकर ले गया। राजा ने घोषणा की कि जो व्यक्ति उस राक्षस से राजकुमारी को मुक्ति दिलाएगा उसी से राजकुमारी की शादी कर देंगे और राज्य भी उसे ही दे दिया जाएगा।

तब ये छहों बेटे बड़े भाई के बनाए हुए जहाज़ में बैठकर राजकुमारी की खोज में निकल पड़े। समुद्र पार करके जब धरती आई तो तीसरे भाई ने ध्यान से सुनकर बताया

कि राजकुमारी एक शीशे के पहाड़ में बंद है और वहां बैठी रो रही है। वे लोग पहाड़ तक पहुंचे तो चौथा भाई पहाड़ पर चढ़ गया। ऊपर पहुंचकर उसने गुफा में झांका तो देखा कि राजकुमारी की जांघ पर राक्षस सिर रखे सो रहा है। यदि राजकुमारी को उठाकर वह लाता तो राक्षस जाग जाता। इसलिए वह नीचे उतरा और उसने अपने छठे भाई से कहा, "तुम मेरे कंधे पर बैठकर ऊपर चलो और राजकुमारी को चुपके से चुरा लाओ।" बस, इस तरकीब से वे भाई राजकुमारी को पहाड़ की गुफा से बाहर ले आए।

पहाड़ से नीचे आकर राजकुमारी ने कहा, "राक्षस हम सबको मार डालेगा। परंतु उसे मारना आसान नहीं है। उसके हृदय के पास एक काला तिल है, वहीं पर यदि तीर मारा जाए तभी राक्षस मारा जा सकता है।"

पांचवें भाई ने तीर कमान पर चढ़ाकर कहा, "तुम डरो मत, मैं अभी राक्षस को ख़तम करता हूं।"

जब राजकुमारी को चुराकर वे लोग पहाड़ से नीचे उतर रहे थे तभी राक्षस उठ गया और मुंह फाड़कर उनकी ओर लपका। उसी समय पांचवें भाई ने एक तीर से उसका काम तमाम कर दिया।

अब सब भाई राजकुमारी को लेकर राजा के पास आए। राजा की समझ में नहीं आया कि वह किसको राजकुमारी सौंपे। उसने अपनी बेटी की पसंद पूछी तो वह बोली, "मुझे तो सभी भाई पसंद हैं। अब इनकी राय पूछ लें।" सभी भाई राजकुमारी पर मुग्ध थे। कोई भी अपना हक छोड़ने को तैयार नहीं था। अब तो कठिन समस्या आ पड़ी। इतने में एक परी आई। उसने सब भाइयों और राजकुमारी को अपने

जादू के डंडे से चमकते हुए सितारों का रूप दे दिया।

बच्चो, रात को आसमान में जो सात सितारे दिखाई पड़ते हैं, कहते हैं, ये छहों भाई और राजकुमारी ही हैं। सबसे तेज़ चमकने वाला सितारा राजकुमारी है और सबसे धीमा चमकने वाला सितारा छठा चोर भाई है।

सन्तू और साईं

सन्तू नाम का एक मोची रामपुर में रहता था। शहर से कुछ हटकर उसकी झोंपड़ी थी। झोंपड़ी पर छप्पर डालकर उसे ठीक-ठाक कर दिया गया था। इससे आंधी-पानी से काफी बचाव हो गया था।

सन्तू काम में होशियार था, उसकी दुकान में मरम्मत के लिए आए हुए जूतों का हमेशा ढेर लगा रहता था। काम निबटने को ही न आता था। कारण यह था कि सन्तू ग़रीबों के जूतों की मरम्मत करने की ओर विशेष ध्यान देता था। उनसे मज़दूरी भी कम लेता था। नतीजा यह हुआ कि सन्तू की आमदनी बहुत कम रह गई। पर लोगों की भीड़ किसी क़दर भी कम नहीं हुई, क्योंकि सन्तू के पास गप्पों का ख़ज़ाना था। उसकी दुकान पर न केवल मोहल्ले-टोले की, बल्कि शहर-भर की ख़बरों की चर्चा होती थी। इसलिए सन्तू को सब ख़बरें ताज़ी ही मिलती थीं। सन्तू था भी बड़ा मिलनसार, वह दोस्तों का हुक्के-पानी से स्वागत करता था।

धीरे-धीरे सन्तू की आर्थिक हालत ख़स्ता होती गई। घर सात बच्चे थे। उनके लिए दो जून खाना जुटाना कठिन हो गया। सन्तू की पत्नी रधिया पति को बुरा-भला कहती। पर

सन्तू अपनी आदतों से लाचार था। एक दिन जब कि दिन-भर की मजलिस और गप्प-शप्प के बाद सन्तू घर लौटा तो उसने अपने सातों बच्चों को एक फटी कथरी में गुड़मुड़ होकर सोते देखा। उन्हें देखकर पत्नी से कहा, "बच्चों को एक कम्बल और उढ़ा दो।"

पत्नी बिगड़कर बोली, "कहां से लाऊं कम्बल? सब तो एक-एक करके गिरवी रख दिए। आज तो बच्चे भूखे ही सो गए हैं। तुम्हारे लिए एक रोटी रखी हुई है सो खा लो।"

सन्तू को बच्चों की दुर्दशा देखकर बड़ा दुःख हुआ। वह बिना कुछ खाए खटिया पर पड़ा रहा। झरोखे में से चांद दिखाई दे रहा था। चांद को देखकर उसे एक बात याद आई कि दूर पहाड़ी पर जो बुद्धिमान साईं रहते हैं, मैं उनके पास जाकर सलाह करूंगा कि क्या करूं। साईं जी दुष्टों से बात भी नहीं करते, पर मैं तो बुराई से कोसों दूर रहता हूं। मुझ पर तो अवश्य दया करेंगे।

दूसरे दिन वह सुबह ही उठकर सीधा पहाड़ की ओर चल पड़ा। काफी दूर तक जाने पर उसे साईं जी की कुटिया दिखाई दी। सन्तू को देखकर साईं जी ने बड़े प्रेम से पूछा, "कहो बच्चा, कैसे आना हुआ? तुम्हें क्या कष्ट है?"

सन्तू ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज, मैं सुबह से लेकर शाम तक मेहनत करता हूं, पर तब भी पूरा नहीं पड़ता। बच्चों के लिए दो जून भोजन जुटाना मुश्किल हो गया है। उनका कष्ट मुझसे देखा नहीं जाता।"

सन्तू की बात सुनकर साईं अंदर गए और सूत की एक थैली लेकर आए। थैली सन्तू को थमाते हुए वे बोले, "सन्तू, यह थैली बड़ी करामाती है। इसे उल्टा करके जब तुम कहोगे



कि 'झड़ थैली झड़' तो यह तब तक मोहरें बरसाती रहेगी जब तक तुम यह नहीं कहोगे कि 'रुक थैली रुक'। पर याद रखना, इसके विषय में किसी से चर्चा मत करना।"

सन्तू धन्यवाद देकर थैली लेकर चला। रास्ते में गांव की सराय पड़ती थी, जहां रुककर वह अक्सर कुछ खाया-पिया करता था। वहां से जब वह निकला तो सराय वाले ने सन्तू को आवाज़ दी, "आओ भाई, गर्म-गर्म रोटियों का मज़ा लो, खाने का वक्त हो गया है। चलो, आज भी उधार ही सही।"

गप्पी सन्तू का बात किए बिना पेट फूल रहा था। उसने सराय वाले के पास जाकर कहा, "उधार क्यों, आज तो मैं तुम्हारा सारा उधार चुकाकर ही जाऊंगा। अब मुझे किस बात की कमी है!"

सराय वाले ने हैरानी से पूछा, "ऐसा कहां का ख़ज़ाना मिल गया?"

सन्तू ने थैली को उल्टा करके कहा, "ख़ज़ाना ही समझो। देखो तमाशा।"

सन्तू के 'झड़ थैली झड़' कहते ही थैली में से मोहरें झड़ने लगीं। जब काफी मोहरों का ढेर लग गया तो सन्तू ने 'रुक थैली रुक' कहा—और मोहरें सराय वाले को देकर पिछला सब कर्ज़ा चुका दिया। सराय वाला और उसकी पत्नी यह चमत्कार देखकर हैरान रह गए। आंखों-ही-आंखों में दोनों ने एक-दूसरे को कुछ संकेत किया।

जब सन्तू घर थैली लेकर पहुंचा तो पत्नी ने कहा, "सुबह से दिन भर कहां रहे? कुछ घर-बार की भी सुध है?"

सन्तू ने मुस्कराकर कहा, "अब घबड़ाओ मत। देखो, सब ग़रीबी दूर हुई जाती है।"

सन्तू ने थैली को उलट कर कहा, "झड़ थैली झड़।" पर थैली तो सराय वाले और उसकी पत्नी ने बदल दी थी। भला नकली थैली कहां से मोहरें झाड़ती?

बेचारा सन्तू निराश होकर दूसरे दिन फिर साईं के पास पहुंचा और सारी बात उन्हें बता दी। अब की साईं ने उसे एक हंडिया दी और कहा, "इसे उलट कर तुम जो कुछ भी खाने को मांगोगे, तुम्हें मिलेगा। जब रुकने को कहोगे तभी हंडिया में से भोजन निकलना बंद होगा।"

सन्तू हंडिया लेकर जल्दी-जल्दी अपने घर की ओर भागा। उसे अपने भूखे बच्चों का चेहरा याद आ रहा था। रास्ते में फिर सराय पड़ी। सराय का मालिक तो ताक में ही था। उसने सन्तू को फुसलाकर गर्म-गर्म पुलाव खाने के लिए रोक लिया। सन्तू बोला, "तुम्हारा पुलाव खाकर क्या करूंगा! मेरे पास तो करामाती हंडिया है। षट्रस भोजन उससे मिल सकते हैं।"

सराय वाले के कहने पर कि यह सब कोरी गप्प है, सन्तू तैश में आ गया और उसने हंडिया की करामात उसके आगे प्रदर्शित कर दी।

इस बार भी सराय वाले ने अपनी पत्नी के साथ मिलकर चाल चली और उस हंडिया के बदले में दूसरी हंडिया रख दी।

बेचारा सन्तू जब घर पहुंचा तो उसने बड़ी शेख़ी से अपने बच्चों से कहा, "घर में जितनी थाली, कटोरे, टोकरी हैं, यहां उठा लाओ। आज सब बर्तनों को मिठाई, पूरी और फलों से भर दूंगा।"

इस बार भी सन्तू को निराश होना पड़ा। बच्चे भूख से

बिलखते रह गए। पत्नी जली-कटी सुनाती रही। सन्तू लज्जित होकर चुपचाप पड़ा रहा। उसे अफ़सोस हो रहा था कि उसने साईं की सलाह न मानकर थैली और हंडिया का रहस्य सराय वाले को क्यों बता दिया।

दूसरे दिन सवेरे ही वह फिर साईं के पास पहुंचा और उन्हें अपनी भूलचूक सब बता दी। साईं ने कहा, "सन्तू, तुम बड़े भोले और नासमझ हो। तुम्हारी दोनों चीज़ें सरायवाले ने बदल ली हैं। मैं तुम्हें अबकी एक रस्सी और डंडा देता हूं। ये तुम्हारे हुक्म से दुष्टों को सज़ा देंगे।"

सन्तू उन दोनों चीज़ों को लेकर अबकी सराय में ख़ुद ही पहुंच गया। उसने सराय वाले से कड़ककर कहा, "लाओ मेरी असली थैली और हंडिया। नहीं तो आज तुम्हारी ख़ैर नहीं।"

सराय वाले ने ढीठ होकर कहा, "चल, चल, बड़ा आया करामाती थैली और हंडिया वाला। लोग सुनेंगे तो हसेंगे कि क्या बढ़िया नई गप्प गढ़ी है।"

सन्तू ने अधीर होकर डंडा और डोरी संभाली और कहा, "जकड़ रस्सी खटाखट डंडे।"

बस इतना कहना था कि रस्सी ने सरायवाले और उसकी पत्नी, दोनों को जकड़ लिया और डंडा लगा पटापट बरसने। सरायवाले की गंजी चांद चटख़ने लगी और उसकी मुटल्ली पत्नी डंडे खा-खाकर पस्त हो गई। दोनों जने दुहाई देने लगे, "इस डंडे को रोको, सन्तू। हम अभी तुम्हारी थैली और हंडिया लाकर देते हैं।"

सन्तू अपनी तीनों चीज़ें लेकर घर पहुंचा और थैली से मोहरें और हंडिया से भोजन बरसाकर उसने घर भर लिया।

दूसरे दिन साईं जी उसके घर पहुंचे और बोले, "सन्तू, ज़रूरत से ज्यादा तुम्हारे पास सब चीज़ें हो गई हैं। अब वे तीनों करामाती चीज़ें मुझे वापस करो और मेहनत करके अपनी रोज़ी-रोटी कमाओ। गप्पबाज़ी छोड़ दो।"

साईं अपनी तीनों चीज़ें लेकर पहाड़ से भी परे चला गया और फिर कभी दिखाई नहीं पड़ा। सन्तू ने अपने सब बच्चों को मेहनती बनाया। सुबह से शाम तक वह मेहनत करता और उसके बच्चे भी मेहनत से पढ़ते। अब उनका धंधा ख़ूब चमक उठा और उनके दिन सुख से बीतने लगे।

बोतल का भूत

मानपुरा में एक बुढ़िया नाइन रहती थी। बुढ़ापे के कारण उसके गाल बैठ गए थे, बाल सफ़ेद हो गए थे। मुंह में दांत न होने के कारण ठोड़ी आगे को निकल आई थी। इससे उसकी लम्बी नाक कुछ अधिक लम्बी दीखने लगी।

इस बुढ़िया के एक नातिन थी। इस नातिन के मां-बाप छुटपन में ही मर गए थे। सो बुढ़िया ने ही उसे पाला-पोसा था। नातिन का नाम था लक्ष्मी। पर उसकी मां उसे लछमिनिया कहकर बुलाती थी। बुढ़िया ने अपनी सहूलियत के लिए उसका नाम मनिया कर लिया था। मनिया एक बहुत चंचल और खिलाड़ी लड़की थी। अपनी इस आदत के कारण वह किसी भी काम को पूरा न कर पाती थी। एक दिन बुढ़िया ने मनिया से कहा, "बिटिया, मैं ज़रा जाकर रानी के हाथ-पांवों में उबटन मल आऊं, तब तक तू खिचड़ी पकाकर तैयार रखना।"

रनिवास का काम ठहरा। बुढ़िया को वहां उबटन मलते, रानी को नहलाते, शृंगार करते दोपहर हो गई। वहां से छुट्टी पाते ही वह जल्दी-जल्दी घर की तरफ़ चल दी। उसे बड़ी भूख लगी हुई थी। सोच रही थी, जल्दी घर पहुंचूं तो खिचड़ी



खाऊं। पर आई तो उसने देखा कि मनिया का तो कहीं पता नहीं है। शायद पड़ोस में खेलने चली गई थी और खिचड़ी पतीली में जलकर राख हो गई थी। बुढ़िया को बहुत गुस्सा चढ़ा। वह पड़ोस से मनिया को कान पकड़कर घर ले आई और दरवाज़ा बंद करके उसे दो-चार थप्पड़ जड़कर बोली, "कलमुंही, तुझसे कुछ काम भी होता है कि दिन-भर खेलने की ही धुन सवार रहती है? लड़की की ज़ात है, कुछ शऊर नहीं सीखेगी तो पराये घर जाकर निर्वाह कैसे होगा? मैं तो तुझसे परेशान हो गई हूं। तेरी जैसी लड़की से तो कोई मुर्दघाट का भूत भी ब्याह नहीं करेगा।"

बुढ़िया के मुंह से मुश्किल से ये शब्द निकले थे कि किसी ने बुढ़िया का दरवाज़ा खटखटाया। बुढ़िया ने पूछा, "कौन है?"

उत्तर मिला, "मैं हूं मुर्दघाट का भूत।"

बुढ़िया पहले तो डर गई। फिर उसने सोचा कि हो सकता है, गली-मोहल्ले का कोई शैतान लड़का मसख़री कर रहा हो। और यदि सचमुच में यह भूत है तो कुछ ऐसा उपाय करना चाहिए कि यह काबू में आ जाए। इसलिए उसने हिम्मत करके पूछा, "तू किसलिए यहां आया है?"

भूत ने कहा, "तुम्हारी नातिन से ब्याह करने।"

यह जवाब सुनकर बुढ़िया बहुत घबराई, पर थी वह बड़ी चतुर। बोली, "यदि तू भूत है तो दरवाज़े के छेद में से मक्खी बनकर अन्दर आ।"

भूत के लिए यह बात कौन मुश्किल थी? वह बोला, "अच्छा, आता हूं।"

इधर बुढ़िया ने अंदर से छेद में एक बोतल का मुंह सटा

दिया और जैसे ही भूत मक्खी बनकर बोतल में घुसा, उसने बोतल में ढक्कन लगाकर कसकर उसे बंद कर दिया। अब भूत महाशय बोतल के अंदर ही कैद हो गए। भूत ने बाहर निकलने के लिए काफी खुशामदें कीं, पर बुढ़िया ने उसकी एक बात नहीं सुनी। वह बोतल को शहर के बाहर पहाड़ी पर नीम के एक कोटर में रख आई।

बोतल को वहीं पड़े एक-दो साल बीत गए। एक दिन दूसरे गांव का एक नाई उसी नीम के रास्ते होकर कहीं जा रहा था कि उसे सुनाई दिया, जैसे उसे कोई पुकार रहा है। वह चौंककर इधर-उधर देखने लगा। उसे पास के नीम के पेड़ से आवाज़ आती मालूम हुई। वह पेड़ के पास गया तो उसने उसके नीचे एक बोतल को उछलते-कूदते देखा। ग़ौर से देखने पर उसमें नाई को एक बड़ी मक्खी दिखाई पड़ी। नाई सोचने लगा कि क्या इसी बोतल से आवाज़ आ रही थी? वह अभी इस दुविधा में ही था कि बोतल में से भूत बोला, "भैया नाई, इस बोतल में मैं मरघट का भूत बंद पड़ा हूं। मेहरबानी करके तुम बोतल का ढक्कन खोल दो। मैं तुम्हारा उपकार मानूंगा।"

भूत का नाम सुनकर पहले तो नाई चौंका, फिर कुछ हिम्मत करके बोला 'न बाबा! तू ठहरा भूत। बोतल में से निकलकर कहीं मुझे ही चिपट जाए तो क्या करूंगा? जिसने तुझे इसमें बंद किया वह कोई तेरा बाप ही होगा।"

भूत ने कांपते हुए कहा, "बाप न कहो बाबा, होने वाली सास कहो।"

"क्या भूतों के भी सास होती है? क्या किस्सा है, बताओ तो सही।"

भूत ने कहना शुरू किया, "वह जो पहाड़ी के नीचे तुम जो बस्ती देखते हो न, उसी शहर में एक बुढ़िया नाइन रहती है। उसकी सूरत यदि तुम रात में देख लो तो बस डर के मारे कांपने लगो। उसी के एक सुंदर-सी, प्यारी-सी नातिन है। वह बुढ़िया एक दिन खिचड़ी जल जाने पर नातिन को डांट रही थी—कि तुझे तो कोई भूत भी नहीं ब्याहेगा। मैंने यह बात सुन ली, और नातिन को ब्याह कर ले जाने के इरादे से मैंने उसके घर का दरवाज़ा खटखटाया। पर बुढ़िया बहुत चालाक निकली। उसने मुझे छेद में से मक्खी बनकर घर के अंदर आने को कहा। मुझे क्या मालूम था कि उसने छेद के मुंह पर बोतल सटाई हुई है। बस, मैं जैसे ही छेद में से मक्खी बनकर घुसा कि उसने मुझे बोतल में बंद कर दिया और यहां छोड़ गई।"

नाई को भूत की बात सुनकर बड़ी हंसी आई। वह भी बहुत दिनों से अपने बेटे के लिए सुंदर बहू की तलाश में था। बुढ़िया की नातिन की बात सुनकर उसने बुढ़िया के घर जाने का फ़ैसला किया। नाई को जाते देखकर भूत फिर खुशामद करके बोला, "भैया, तुम्हारे हाथ जोड़ता हूं, मुझे बोतल से बाहर करते जाओ। तुम डरो मत, मैं तुम्हारी इस नेकी का बदला जरूर चुका दूंगा। मैं इस देश के राजा के लड़के को जाकर घर दबाऊंगा। जब तुम उस राजकुमार पर पानी छिड़कोगे तभी छोड़ूंगा। बस, राजा खुश होकर तुम्हें बहुत बड़ा इनाम देंगे।"

नाई को यह बात पसंद आ गई और उसने बोतल का ढक्कन खोलकर भूत को मुक्त कर दिया।

नाई पहाड़ी से उतर कर सीधा बुढ़िया के घर पहुंचा

और अपना अता-पता देकर उसने बुढ़िया की नातिन मनिया से अपने बेटे की शादी की बात पक्की कर दी। एक दिन वह कुछ ख़रीदने बाज़ार गया, तो उसने ढिंढोरा पिटता सुना कि 'राजा का बेटा बीमार है, वह रह-रह कर चिल्लाता है और उसे दर्द के मारे ग़श आ जाता है। राजवैद्य उसका इलाज करके हार गए हैं। जो उसे अच्छा कर देगा, राजा उसे दस गांव की जागीर इनाम देगा।'

नाई समझ गया कि बोतल का भूत राजकुमार को चिपटा हुआ है। वह राजदरबार में पहुंचा और उसने राजकुमार को चंगा करने का ज़िम्मा लिया। उसने झूठ-मूठ भूत उतारने का ढोंग रचा और कुछ मंत्र पढ़कर राजकुमार पर पानी छिड़क दिया।

अपने वायदे के अनुसार भूत राजकुमार को छोड़कर चला गया। अब तो राजा बहुत खुश हुए और उन्होंने नाई को जागीर में एक गांव देकर अपने ही राज्य में बसा लिया। इधर नाई ने अपने बेटे से मनिया की शादी कर दी और वह बड़े सुख से रहने लगा।

मनिया की शादी नाई के लड़के से हो गई तो भूत को बड़ी भारी चिढ़ हुई। वह नाई के बेटे को सताने लगा। अब तो नाई बड़ा परेशान हुआ। उसने भूत से कहा, "देख, तू मेरे लड़के को छोड़कर चला जा नहीं तो तेरा बुरा होगा। मैंने तेरे साथ नेकी की है और अब तू मेरे बेटे को ही सता रहा है। यह ठीक नहीं है।"

पर भूत नहीं माना। आख़िर नाई को एक तरकीब सूझी। उसने दस-बारह ढोलक और नगाड़े वालों को इकट्ठा किया। उनसे कहा कि वे गांव की सीमा से उसके घर तक खूब

ज़ोर-ज़ोर से ढोलक और नगाड़े पीटते हुए आएं। इधर भूत नाई के बेटे की जब-जब गर्दन दबाता, वह रह-रहकर चिल्लाता। ढोलक व नगाड़ों की तेज़ आवाज़ सुनकर भूत ने नाई से पूछा, "यह हल्ला-गुल्ला काहे का है?"

नाई ने कहा–"मैं क्या जानूं, कुछ होगा।"

भूत बोला–"ज़रा देखकर तो आओ कि क्या मामला है?"

नाई ने कुछ सोचकर कहा, "अच्छा, तू कहता है तो देख आता हूं।"

लौटकर नाई ने बताया कि वह बुढ़िया नाइन एक फ़ौज लेकर भूत को पकड़ने आ रही है और साथ ही उसके पास एक बड़ी बोतल है, जिसमें वह भूत को कैद करेगी।

यह बात सुनकर भूत के तो होश गुम हो गए। वह सिर पर पांव रखकर वहां से खिड़की के रास्ते भाग गया और फिर उसने लौटकर कभी उस राज्य की ओर मुंह भी नहीं किया।

बांकेशाह

एक गांव में बांकेशाह नाम का एक नौजवान रहता था। नदी के किनारे उसने एक पनचक्की लगाई हुई थी। उस पनचक्की पर लोगों का आटा पीसकर वह अपना गुज़ारा करता था। सुबह वह रोटी बनाता। दोपहर को घर आकर खाता। उसी में से जो दो रोटी बच जातीं, उन्हें वह रात को खाकर सो जाता।

एक दिन वह काम पर गया। दोपहर को घर लौटने पर उसने अपनी रोटी नदारद पाई। बेचारे ने फिर चूल्हा जलाया, रोटी पकाई-खाई और दो रोटी शाम के लिए टोकरी में ढककर रख दीं। शाम को आया तो रोटी फिर नदारद। उसे बड़ी हैरानी हुई और गुस्सा भी आया। उसने चोर को पकड़ने के लिए एक फंदा लगा दिया। सवेरे जब सोकर उठा तो उसमें एक लोमड़ी फंसी हुई मिली।

लोमड़ी ने विनती करते हुए कहा, "शाहजी, मैं भूखी थी तो रोटी उठाकर ले गई। मुझे माफ़ कर दो। मैं तुम्हारी मेहरबानी का कर्ज़ा चुका दूंगी।"

बांकेशाह ने दया करके लोमड़ी को छोड़ दिया। छूटकर लोमड़ी सीधी राजा की टकसाल की ओर गई। वहां सोने की

मोहरें ढलती थीं। उसने एक मोहर उठा ली और उसे मुंह में दबाकर राजदरबार में पहुंची। राजा के आगे जाकर बड़े अदब से बोली, "महाराज की जय हो! मेरे मालिक बांकेशाह को अपनी मोहरों का ढेर गिनना है। मोहरें नापने की अपनी टोकरी दे दीजिए।"

राजा सुनकर बड़ा हैरान हुआ। कहा, "यह बांकेशाह कौन है भला?"

लोमड़ी बोली, "महाराज, मौका आने पर आपसे मिला दूंगी।" और वह टोकरी लेकर चली गई। अगले दिन जब वह टोकरी वापस करने गई तो उसमें एक मुहर चिपका दी।

टोकरी में एक मोहर देखकर राजा को लोमड़ी की बात पर पक्का यकीन हो गया। दो दिन बाद लोमड़ी फिर टोकरी मांगने पहुंची और कहा कि मेरे मालिक को आज मोती-मानिक तोलने हैं।

राजा को फिर बड़ा आश्चर्य हुआ। राजा से टोकरी लेकर लोमड़ी सुनार गली में से एक मोती ढूंढकर ले आई। उस मोती को उसने टोकरी में रखा और दूसरे दिन राजा को टोकरी लौटा दी। राजा ने मोती देखा तो बड़ा हैरान हुआ।

कुछ दिन बाद फिर लोमड़ी दरबार में आई और राजा का अभिवादन करके बोली, "महाराज, हमारे शाह विवाह करना चाहते हैं। सुना है, आपकी एक कन्या विवाह योग्य है। क्यों न अपनी कन्या का विवाह शाह से कर दें?"

राजा को यह प्रस्ताव बहुत पसंद आया। शादी की तैयारियां होने लगीं। जिस दिन बारात को चलना था, लोमड़ी बांकेशाह के पास आकर बोली, "आप तैयार हो जाएं, मैं राजकुमारी के साथ आपका ब्याह ठीक कर आई हूं। आज ब्याहने के



लिए चलना है।"

लोमड़ी की बात सुनकर बांकेशाह हैरान रह गया और बोला, "यह क्या तमाशा है! मैं एक ग़रीब आदमी और तुम राजा की बेटी ब्याहने की बात कहती हो।"

लोमड़ी ने कहा, "आप घबराएं नहीं, मैं सब ठीक कर लूंगी।"

यह कहकर वह राजदरबार में पहुंची और राजा से कहा, "महाराज, मेरे शाह पूरी सजधज के साथ बारात लेकर आ रहे थे। रास्ते में डाकुओं के दल ने उन्हें घेर लिया। वे अपने साथ सब लोगों को पकड़कर ले गए। सारा सामान लुट गया। मेरे शाह भेस बदलकर किसी तरह निकल भागे और अब उन्होंने एक पनचक्की में शरण ली है। कृपा करके अब आप उन्हें ज़ेवर तथा घोड़े-हाथी भेजें ताकि वे ब्याहने आ सकें।"

राजा ने कहा, "ख़ैर, कोई फिक्र की बात नहीं, हम शाह के दुश्मनों से बाद में निबट लेंगे, अभी तो आप बारात सजाकर ले आओ।"

इस प्रकार लोमड़ी की कृपा से बांकेशाह दूल्हा बनकर राजदरबार में पहुंचा। कन्या ने वरमाला पहनाई। बांकेशाह हैरान होकर चारों ओर देखता रह गया।

राजा ने पूछा, "लोमड़ी जी, आपके शाह इस प्रकार हैरान होकर चीजों को क्यों देख रहे हैं? कुछ बोलते नहीं, खाते नहीं। बात क्या है?"

लोमड़ी बोली, "महाराज, हमारे शाह को अपना सामान खो जाने और डाकुओं से अपमानित होने का दु:ख है। इसी मारे वे कुछ नहीं खा-पी रहे।"

ख़ैर, विवाह हुआ। सात दिन तक जलसा होता रहा। जब चलने की बेला आई तो लोमड़ी बोली, "आगे-आगे मैं चलती हूं, पीछे डोली भेजिए।"

रास्ते में बहुत-से ढोर चर रहे थे। लोमड़ी ने पूछा, "यह किसके ढोर हैं?"

चरवाहों ने कहा, "यह तो हमारे राजाराव के ढोर हैं।"

लोमड़ी ने चेतावनी देते हुए कहा, "हरे राम, ऐसा कभी मत कहना। राजाराव पर महाराजा साहब बहुत नाराज़ हैं। वह फ़ौज लेकर उसे कैद करने आ रहे हैं। कोई पूछे तो कह देना कि ढोर बांकेशाह के हैं, तभी बचोगे।"

आगे हरे-हरे खेत दिखाई पड़े। लोमड़ी ने पूछा, "यह खेत किसके हैं ?"

किसानों ने कहा, "यह हमारे राजाराव की ज़मींदारी है।"

लोमड़ी ने कहा, "ना-ना, ऐसा मत कहना। पीछे महाराजा साहब की फ़ौज आ रही है, राजाराव को कैद करने। तुमसे कोई पूछे तो कह देना, यह खेत-खलिहान बांकेशाह के हैं। तभी तुम बच पाओगे।"

यह कहकर लोमड़ी राजाराव के महलों की ओर चल पड़ी और राजाराव को चेतावनी देती हुई बोली, "राजाराव, ख़ैर चाहते हो तो चोर दरवाज़े से भाग जाओ। महाराजा की फ़ौज तुम्हें कैद करने आ रही है।"

राजाराव ने कई वर्षों से महाराजा को कर नहीं चुकाया था। वह डरकर सचमुच चुपके से चोर दरवाज़े से भाग गया। अब महाराजा के सभासद, घुड़सवार, हाथी, पालकी आदि का जुलूस सब चरागाहों और खेतों की ओर से निकला और

पूछने पर उन्हें पता चला कि यह सब बांकेशाह के हैं, तब वे बड़े प्रभावित हुए और बड़े उत्साह से महलों की ओर बढ़े। महलों के तोरण-द्वार पर लोमड़ी राज्य के मंत्री-सेनापतियों को लेकर दूल्हा-दुल्हन के स्वागत के लिए खड़ी थी। सुहागिनों ने उनकी आरती उतारी। आठ दिन तक जलसा मनाया गया। बांकेशाह और उसकी रानी बड़े सुख से वहां रहने लगे। लोमड़ी की सलाह से बांकेशाह ने बड़ी अक्लमंदी से राज-काज संभाला।

चमत्कारी हंडा

कल्लू अपनी बीवी रज़िया के साथ एक पहाड़ी पर रहता था। उसके पास कुछ भेड़ें थीं। उसी की ऊन इकट्ठी करके वह जुलाहों को दे आते और कंबल तैयार करवाकर उन्हें हाट में रोज़ बेच आते। एक साल भेड़ों में बीमारी फैली। कल्लू की सब भेड़ें मर गईं। अब तो उनकी गुज़र-बसर होनी मुश्किल हो गई। जाड़ा शुरू हो गया था। तन ढकने को कपड़ा नहीं, जलाने को ईंधन नहीं और भेड़ों के मर जाने से कुछ धंधा-रोज़गार भी नहीं रहा था। उन्हें बड़ी चिंता थी कि कैसे यह जाड़ा कटेगा।

एक दिन रज़िया ने कल्लू से कहा, "सुनो जी, आजकल बुआई का मौसम है। हमारी झोंपड़ी के आसपास काफी ज़मीन बेकार पड़ी है। क्यों न इसे ठीकठाक करके कुछ अनाज ही बो दें।"

कल्लू को अपनी बीवी की यह बात बहुत पसंद आई। ज़मीन पथरीली थी। उसे खोदने के लिए फावड़ा और गेंती की ज़रूरत थी। रज़िया ने अपने गले की हंसली देकर कहा, "जाओ, इसे गिरवी रख आओ। कुछ रुपये तो मिल ही जाएंगे। बाज़ार से कुछ बीज ले आओ, थोड़ा आटा और

दाल-चावल भी ले आना, तब तक मैं पड़ोसी से गेंती और फावड़ा मांगकर लाती हूं।"

ख़ैर, कल्लू दिन-भर ज़मीन को संवारने में लगा रहा। खोदते-खोदते उसका फावड़ा किसी कड़ी चीज़ से टकराया। कल्लू ने और तेज़ी-से खोदना शुरू किया। अंत में खोदने पर एक बड़ा-सा हंडा निकला। हड़बड़ी में टेंट में खोंसी हुई उसकी तम्बाकू की थैली हंडे में जा पड़ी। उसी थैली में उसके बचे हुए पांच रुपये भी थे।

हंडे को जब उसकी बीवी रज़िया ने देखा तो बोली, "चलो, पानी गर्म करने और कपड़े धोने के काम ही आएगा।"

रज़िया के हाथ में कड़छी थी। वह भी उसके हाथ से छूटकर हंडे में जा गिरी। उसने जैसे ही उसे निकालने के लिए हंडे में हाथ डाला तो उसमें से दो थैलियां और दो कड़छियां निकलीं। दोनों थैलियों में पांच-पांच रुपये और तम्बाकू भरा हुआ था।

यह देखकर पति-पत्नी दोनों ख़ुशी से फूल गए।

"ज़रूर इस हंडे में कुछ चमत्कार है!" कल्लू ने कहा।

"अच्छा, अबकी बार इसमें अपना काला कम्बल डाल दो। हमारे पास एक ही कम्बल है। दो बन जाएंगे तो जाड़े में ठिठुरने से बच जाएंगे।" हंडे में डालते ही कम्बल एक के दो बन गए। इसके बाद उन्होंने अपना पुराना कोट, फटी गुदड़ी, सभी कुछ उस हंडे में डाल-डालकर दुगना कर लिया।

कल्लू बोला, "आज अगर हमारे पास अच्छी-अच्छी चीज़ें होतीं तो हम उनको भी इसमें डालकर दुगना कर लेते।"

रज़िया को एक बात सूझी। उसने पति की थैली उठाकर



कहा, "इस थैली को हंडे में बार-बार डालकर निकालते जाओ। जब हमारे पास ढेर से रुपये हो जाएंगे तो बाज़ार से बढ़िया-बढ़िया चीज़ें ख़रीद लाएंगे।"

कल्लू ने वैसा ही किया। अब उनके आस-पास थैलियों का ढेर लग गया। प्रत्येक थैली में तम्बाकू और पांच-पांच रुपये थे। रज़िया समझदार थी। उसने सब थैलियों में से रुपये निकालकर एक थैली में किए और उसे हंडे में डाल दिया। थोड़ी देर में ही हंडा दुगने रुपयों से भर गया।

दूसरे दिन बड़े तड़के उठकर कल्लू और रज़िया ने मिलकर घर साफ़ किया। नाश्ता करके कल्लू बाज़ार से बढ़िया-बढ़िया चीज़ें, मिठाई, पोशाक आदि ख़रीदने लगा और रज़िया खाना बनाने में जुट गई। वह पड़ोसिन से कुछ आलू और गोभी उधार मांग लाई और उन्हें हंडे में बार-बार डालकर अपने चारों ओर आलू और गोभी का ढेर लगा लिया। वह बार-बार झुकती और हंडे में से ढेर से आलू निकालती। इतने में उसका पति रंग-बिरंगी पोशाक आदि लेकर घर में घुसा। उसे देखने को रज़िया जैसे ही मुड़ी कि आलुओं के ढेर पर से फिसलकर वह हंडे में जा पड़ी। कल्लू ने लपककर उसे बाहर खींचा तो मुड़कर क्या देखता है कि हंडे में से एक दूसरी रज़िया बाहर निकलने के लिए हाथ-पांव मार रही है। कल्लू ने उसे भी खींचकर बाहर निकाला।

पर रज़िया को यह बात ठीक नहीं लगी। बात सच भी थी। भला कौन औरत चाहेगी कि उसके घर में सौत आ जाए! वह चिल्लाई, "यह मुई कहां से आ गई? मैं इसे अपने घर में कभी नहीं रहने दूंगी। क्यों जी, तुमने क्यों बाहर निकाला? इसे हंडे में फिर से ठूंस दो।"

बेचारी नई रज़िया घबड़ाकर उन मियां-बीवी की ओर ताकती हुई गाल पर हाथ धरकर चुपचाप बैठी रही। इधर बड़ी रज़िया बीवी का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। कल्लू मियां उसे समझाने के लिए आगे बढ़े कि रज़िया बी ने अपना हाथ छुड़ाने के लिए उसे हाथ से परे धकेल दिया। धक्का खाकर कल्लू मियां के पांव लड़खड़ा गए और वह हंडे में जा पड़ा। दोनों रज़िया ने लपककर उसे बाहर खींचा। पर यह देखकर उन्हें और भी हैरानी हुई कि उसमें एक और कल्लू मियां बाहर निकलने के लिए छटपटा रहे हैं। अब तीनों ने मिलकर उसे भी बाहर खींचा।

रज़िया की अक्ल ने फिर ज़ोर मारा, बोली, "अब सब मुश्किलें हल हो गईं। अब यह नया जोड़ा अपना घर अलग बनाए। हम इनकी गृहस्थी जमाने में मदद देंगे। इनके लिए भी सब चीज़ें जुटा देंगे।"

इस प्रकार पड़ोस में ही उन्होंने उनके लिए मकान, घर-गृहस्थी का सब सामान ठीक कर दिया। उन दोनों के घर में एक-सी चीज़ें थीं और दोनों बहुत मेल-मिलाप से रहने लगे।

बर्फ़ का दूल्हा

हिमालय पर्वत पर एक सरदार रहता था। उसका नाम था माले। अपने दल के सभी लोगों से वह अधिक बलवान और बुद्धिमान था। वह न केवल अपने साथियों पर सरदारी ही करता था, परंतु विपत्ति में उनकी मदद भी करता था।

इस सरदार के एक लड़की थी। जिसका नाम था घुवा। घुवा देखने में बड़ी सुंदर और बाप की बड़ी दुलारी थी। पर उसमें एक बात की कसर थी—वह यह कि उसे अपनी अमीरी और रूप का बड़ा घमंड था। उसके रूप की प्रशंसा सुनकर कई बहादुर सरदार उससे शादी करने की इच्छा से उसके पिता के पास आए। पर गर्वीली घुवा ने सबको ठुकरा दिया। वह मुंह बिचकाकर किसी की नाक चौड़ी और किसी की आंखें तिरछी बताती। जिन नौजवानों को घुवा इस प्रकार ठुकरा देती थी वे निराश होकर रह जाते थे। उनका कुछ वश नहीं चलता था।

उसी प्रदेश में एक नौजवान लड़का रहता था—उसका नाम था अलबेला। अलबेले को भी अपने रूप और बल पर बड़ा नाज़ था। एक दिन जब वह अपने साथियों के संग शिकार पर गया तो उसकी मुठभेड़ एक सफेद रीछ से हो



गई। अलबेले ने अकेले ही उस रीछ को भाले की चोट से मार डाला। रीछ को लाद कर वे अपने डेरे पर ले आए। दूसरे दिन खूब जलसा मनाया गया। अलबेले की बहादुरी और रूप की जब सभी प्रशंसा कर रहे थे, तब उनमें से एक मित्र बोला, "मित्र अलबेले! तुम्हारी शान तो हम तब जानें जब तुम सरदार की बेटी ध्रुवा को ब्याह लाओ।"

अलबेले के दिल में यह बात बैठ गई। उसने सोचा, मैं रूप, गुण, वंश, किसी भी बात में ध्रुवा से कम नहीं हूं। अगर वह एक सरदार की बेटी है तो मैं भी एक अच्छे ख़ानदान का लड़का हूं।

यह निश्चय करके वह दूसरे ही दिन ध्रुवा के पिता के पास पहुंचा। ध्रुवा के पिता को अलबेला पसंद आया। उसने सोचा, ऐसा बहादुर युवक मेरा दामाद बन जाएगा तो मेरा दबदबा और बढ़ जाएगा। ध्रुवा को जब अलबेले का इरादा पता चला तो उसने उसकी ओर उपेक्षा से देखकर कहा, "ऊंह! बड़े आए तुम मुझसे ब्याह करने! कहां तुम और कहां मैं! तुम्हारे जैसों से तो मैं बात भी न करना चाहूं। पहले मेरे लायक तो बन लो, फिर मुझे ब्याहने का ख़्याल करना।"

ध्रुवा से ऐसा जवाब सुनकर अलबेला को बहुत निराशा हुई। पर वह हिम्मत हारनेवाला नहीं था। अलबेले ने ध्रुवा को खुश करने के कई उपाय किए। उसने सात सफ़ेद भालुओं की खाल उसे उपहार में भेजी। एक बढ़िया गाड़ी में ऊंची ज़ात के आठ कस्तूरी मृग जोतकर उसने वह गाड़ी उसके दरवाज़े पर लाकर खड़ी कर दी। ध्रुवा के रहने के लिए बहुत बड़ा तंबू गाड़ दिया, परन्तु इन सब बातों का ध्रुवा पर कुछ असर न हुआ। अलबेला परेशान था कि किस प्रकार ध्रुवा को

प्रसन्न किया जाए। इसी बीच में उसका खाना-पीना छूट गया, वह रात-रात भर इसी सोच-विचार में डूबा रहता।

अलबेले का पिता एक जादू जानता था। उसने जब अपने होनहार बेटे को ऐसा उदास और अपमानित देखा तो वह बोला, "बेटे इसमें कोई शक नहीं कि ध्रुवा अपूर्व सुंदरी और अमीर घराने की लड़की है, परंतु उसका तीखा मिज़ाज फूलों में कांटे के समान दुखदायी है। जब तक इसका घमंड नहीं तोड़ा जाएगा, इसे अक्ल नहीं आएगी। तुम अपना मन छोटा न करो। मैं तुम्हें एक जादू सिखा दूंगा जिससे तुम ध्रुवा को अपमानित कर सकोगे। आओ मेरे साथ, मैं तुम्हें पहाड़ की उस चोटी पर ले जाकर एक चमत्कार दिखाता हूं।"

अलबेला अपने पिता के साथ जब चोटी पर पहुंचा तो उसके पिता ने उसे बर्फ़ और जानवरों की हड्डियां जमा करने को कहा। उनसे उसके पिता ने एक बहुत ही खूबसूरत आदमी बनाया और उसे कपड़े पहनाकर उसके सिर पर रीछ की खाल की टोपी पहना दी और उसके गले में मोती और हड्डियों के ज़ेवर पहनाकर हाथ में एक माला पकड़ा दी। इसके बाद मंत्र पढ़कर उसने उस बर्फ़ के आदमी में जान डाल दी। फिर वह अपने बेटे से बोला, "अलबेले, अब इस आदमी को तुम अपने साथ ले जाओ। तुम जैसा चाहोगे, यह वैसा ही करेगा। पर एक बात का ध्यान रखना, इसे आग के पास मत ले जाना, नहीं तो यह पिघल जाएगा।"

अलबेला उसे लेकर नीचे आया। पूछे जाने पर उसने अपने दोस्तों से कहा कि यह सुंदर पुरुष उत्तर दिशा से आया है, इसका नाम है मोतिया। कुछ ही दिनों में मोतिया की बहादुरी और रूप की प्रशंसा चारों ओर फैल गई। एक दिन

किसी बहाने से अलबेला मोतिया को अपने साथ लेकर घुवा के घर पहुंचा। मोतिया के रूप-गुण की प्रशंसा घुवा पहले ही सुन चुकी थी। आज उसे साक्षात् देखकर वह उस पर मोहित हो गई। अतएव जब मोतिया ने उससे यह पूछा कि क्या तुम मुझसे शादी करोगी, तो ऐसे बहादुर और सुंदर व्यक्ति की पत्नी बनने में उसने अपना गौरव समझा।

मोतिया बोला, "मैं तुम्हें अपने देश ले जाकर ब्याह रचाऊंगा। अगर तुम मुझसे ब्याह करने को उत्सुक हो तो तुम्हें मेरे साथ दूर मेरे देश चलना होगा।"

घुवा बोली, "हां-हां, अवश्य चलूंगी, तुम्हारे पीछे मैं बड़े-से-बड़े कष्ट सहने को तैयार हूं।"

बस, दूसरे दिन तड़के ही मोतिया घुवा को लेकर चल दिया। सबने देखा कि मोतिया आगे-आगे जल्दी-जल्दी चला जा रहा था और घुवा उसीके पीछे-पीछे चल रही थी। मार्ग में कई नदी, नाले और बर्फ़ से ढके हुए पहाड़ पड़े। मोतिया उन्हें झट पार कर गया, घुवा बड़े कष्ट से आगे बढ़ रही थी। मोतिया ने न तो घुवा को अपने हाथ का सहारा ही दिया और न पीछे मुड़कर ताका ही। घुवा चलते-चलते बहुत थक गई थी, पर कहीं मोतिया आंखों से ओझल न हो जाए, इसलिए वह गिरती-पड़ती आगे बढ़ती जा रही थी।

जब उन्हें चलते-चलते दोपहर हो गई और सूरज की किरणें सीधी पड़ने लगीं तो गर्मी में मोतिया का शरीर पिघल-पिघलकर बहने लगा। पहले उसका सिर पिघला, पर वह चलता ही गया। कुछ दूर आगे जाकर उसकी दोनों बांहें पिघल कर गिर पड़ीं, फिर भी वह चलता ही गया। अंत में उसका धड़ और टांगें भी पिघलकर पानी बन गईं और उस

जगह पर टोपी तथा मोती की माला के सिवाय मोतिया का कोई निशान भी न रहा।

जब ध्रुवा वहां पहुंची तो मोतिया के कपड़े, टोपी, मोती की मालाएं तथा माला वहां पड़ा देखकर वह बहुत हैरान रह गई। इसमें कोई शक नहीं था कि वे सब चीज़ें मोतिया ने धारण की हुई थी। ध्रुवा ने सोचा, अवश्य ही मोतिया को कोई जानवर मारकर खा गया है। वह विलाप करने लगी। इतने में उसे सुनाई दिया कि चिड़ियां उसकी हंसी उड़ा रही हैं और चिल्ला-चिल्लाकर कह रही हैं कि "ओ घमंडी ध्रुवा, तेरे मनपसंद के दूल्हे की बस अब यही निशानी बची है। अरी मूर्खा, वह तो बर्फ़ का बना हुआ था—सूरज की गर्मी में वह पिघल गया। तूने अलबेले जैसे बहादुर को ठुकराया जो कि तेरे लिए जान तक देने को तैयार था। तू इसी दंड के लायक थी।"

ध्रुवा ने जब ऐसी आवाज़ सुनी तो वह पश्चात्ताप और दुख से बावली-सी होकर इधर-उधर दौड़ने लगी। वह अपना मार्ग भूल गई और ठोकर खाकर गिर पड़ी।

अलबेले ने उसे मोतिया के पीछे जाते देखा था और वह जानता था कि इसका क्या नतीजा होगा—इसलिए वह ध्रुवा को खोजता हुआ वहां आ पहुंचा। ध्रुवा ठंड और थकावट से बेहोश हो गई थी। अलबेले ने उसे अपने कोट से ढक दिया, उसके हाथ-पांव मले। कुछ देर बाद होश आने पर ध्रुवा ने आंखें खोलीं। अलबेले को वहां देखकर उसने आश्चर्य से पूछा, "तुम यहां कैसे? लगता है मेरी भूल पर हंसने आए हो?"

अलबेले ने ध्रुवा का हाथ पकड़कर उसे मोतिया का

रहस्य बताते हुए कहा, "नहीं घुवा, तुमने मुझे ग़लत समझा। मैं हंसने नहीं, तुम्हें बरबाद होने से बचाने आया हूं। अब तो तुम असली और नकली का भेद समझ गई होगी। क्या मैं उम्मीद करूं कि तुम मुझे स्वीकार करोगी? मैं तुम्हारे लिए शिकार मारकर लाया करूंगा, तुम्हारी रक्षा करूंगा, दुख-सुख में तुम्हारा साथ दूंगा। क्या तुम मेरे साथ चलोगी?"

घुवा अपनी झूठी शान छोड़कर खुशी-खुशी अलबेले के साथ चल दी। डेरे पर आकर बड़ी धूमधाम से उनका ब्याह हुआ और अपने नये डेरे में वे सुख से रहने लगे।

कृतघ्न राजा

एक समय की बात है कि वाराणसी में एक राजा राज्य करता था। उसके दुष्ट कुमार नाम का एक बेटा था। प्रजा उससे बहुत दुःखी थी। एक दिन जलक्रीड़ा करने की इच्छा से वह बहुत-से सेवकों को लेकर नदी पर गया। जिस समय उसके नौकर-चाकर उसे नदी में स्नान करा रहे थे, उसी समय बहुत ज़ोर से तूफ़ान और आंधी-पानी आ गया। मौका देखकर सेवकों ने सलाह की कि हम इस दुष्ट राजकुमार को नदी में डुबोकर चल दें तो हमेशा के लिए पाप कट जाएगा।

बस राजकुमार को मंझधार में धक्का देकर वे लोग महलों में वापस लौट आए। जब राजा ने पूछा कि कुमार कहां है, तो वे बोले, "कुमार नदी में तैर रहे थे। बादल देखकर वे शायद डुबकी लगाकर दूसरे पार निकल गए हैं। अंधकार में हमें दिखाई नहीं पड़े।"

राजा ने आज्ञा दी, "नदी के किनारे-किनारे कुमार की खोज करो और जाल डालकर भी पता लगाओ।" सब ओर खोज करने पर भी अंधेरे में राजकुमार का कहीं पता नहीं चला। इधर जब राजकुमार बहता हुआ बहुत दूर निकल गया, तो उसे एक सूखा काठ बहता हुआ मिला। उसने उस सूखे

काठ को पकड़ लिया और उसी के सहारे बहता रहा। उसी नदी के किनारे एक सांप और चूहा अपने-अपने बिलों में रहते थे। असल में ये दोनों अपने पूर्वजन्म में कंजूस सेठ थे और इन्होंने जहां अपना रुपया जोड़कर गाड़ा था, उन्हीं गड्ढों में ये सांप और चूहा बनकर रहने लगे थे। बाढ़ आने पर इनके बिल में पानी भर गया और लहरें इन्हें नदी में बहा लाईं। प्राण बचाने के लिए इन दोनों ने भी उसी सूखे काठ पर आकर आश्रय लिया। उसी नदी के किनारे एक सेमल का वृक्ष था। पानी ने उसे भी जड़ से उखाड़कर गिरा दिया। उस पेड़ पर एक तोता रहता था। फड़फड़ाकर वह भी इस बहते हुए काठ पर चढ़ गया।

इस प्रकार नदी में उस सूखे काठ पर बैठे हुए ये चारों प्राणी बहते-बहते एक ऐसी जगह पहुंचे, जहां नदी के तट पर एक तेजस्वी तपस्वी कुटिया बनाकर रहते थे। उन्हें उन पर दया आई और वह उन्हें बचाने के लिए नदी में कूद पड़े।

"डरो मत, डरो मत।" ऐसा कहते हुए वह तैरकर उस काठ तक पहुंचे और अपनी बलिष्ठ भुजाओं से उसे धकेलकर किनारे पर ले आए। फिर उन्होंने कुमार को उठाकर किनारे पर बिठाया और सर्प आदि को कुटी में लाकर आग के पास तापने के लिए बैठा दिया। बाद में राजकुमार के शरीर को भी सेंककर उसे भी भला-चंगा कर दिया। पहले उन्होंने सर्प आदि को भोजन दिया, उसके बाद राजकुमार को फल-मूल लाकर दिए।

राजकुमार को यह बात बहुत बुरी लगी कि यह तपस्वी इन पशु-पक्षियों को मुझसे अधिक महत्त्व देता है। उसने सोचा, 'इसकी सजा मैं इसे अवश्य दूंगा।'



कुछ दिन बाद जब नदी की बाढ़ उतर गई, तो तपस्वी को प्रणाम करके सांप बोला, "प्रभो! आपने मुझे जीवन-दान दिया। मैं इसका बदला चुकाना चाहता हूं। अमुक स्थान पर मेरा चालीस करोड़ का सोना पड़ा है। वह सब मैं आपके अर्पण करता हूं। जब आपको धन की जरूरत हो, आप उस स्थान पर आकर 'दीर्घ' कहकर पुकारिएगा।" यह कहकर सर्प चला गया।

चूहे ने भी उसी प्रकार अपनी कृतज्ञता प्रकट की और बोला, "देव! मैं अमुक स्थान पर रहता हूं। मेरे पास भी एक बड़ा ख़ज़ाना है। आपको जब भी धन की आवश्यकता हो, उस स्थान पर आकर 'उन्दूर' कहकर पुकारें।"

तोता भी हाथ जोड़कर बोला, "दयालु, मेरे पास धन तो नहीं है, पर यदि कभी आपको लाल रंग की बढ़िया शालि (धान) की ज़रूरत हो तो मेरे निवास-स्थान पर आकर 'सुवा' कहकर आवाज़ दीजिएगा।"

लेकिन स्वभाव से दुष्ट वह राजकुमार अपने उपकारी को भी कष्ट देने की बात सोचता हुआ ऊपर से मीठी बात बनाकर बोला, "स्वामी जी, मेरे राजा होने पर आप अवश्य पधारिएगा। मैं सब तरह से आपका सत्कार करूंगा।"

चारों अपने-अपने घर चले गए। घर पहुंचने पर राजकुमार को पता चला कि पिता की मृत्यु हो गई है और अब वह राजगद्दी का स्वामी है।

कुछ साल बीत गए। एक दिन तपस्वी ने सोचा कि चलकर सांप आदि की परीक्षा की जाए। सबसे पहले सांप के बिल के पास जाकर उन्होंने 'दीर्घ' कहकर पुकारा। उसने पहली आवाज़ पर ही बाहर निकलकर उन्हें प्रणाम किया

और कहा, "देव, सोना मेरे बिल में है, वह सब आप ले जाएं।"

"अच्छा, अभी तो यहीं रहने दो, लौटते समय सोचूंगा।" इस तरह कहकर, प्रेमपूर्वक विदा ले तपस्वी 'उन्दूर' के निवास-स्थान पर आए। चूहे ने भी सर्प की तरह अपना सब धन ले जाने के लिए तपस्वी से आग्रह किया। "फिर लौटती बेर सोचूंगा," ऐसा कहकर तपस्वी उससे भी विदा लेकर 'सुवा' के पास पहुंचे। तपस्वी की आवाज़ पहचानकर सुवा तत्काल पेड़ से नीचे उतर आया और प्रणाम करके बोला, "देव, क्या मैं अपने संबंधियों को भेजकर हिमालय प्रदेश में स्वयं उत्पन्न होने वाली शालि मंगवाऊं?"

तपस्वी ने 'ज़रूरत होने पर कहूंगा' कहकर उसे उस समय रोक दिया। उस रात तो वे राजोद्यान में रहे और दूसरे दिन राजा की परीक्षा लेने के विचार से भिक्षा मांगते हुए नगर में घुसे।

उस समय वह मित्र-द्रोही राजा सजे हुए हाथी पर बैठकर नगर की सैर कर रहा था। वह तपस्वी को दूर से ही देखकर तुरंत पहचान गया। उसने मन में सोचा, मालूम होता है यह मुफ़्त में मेरे यहां खाने-पीने और कुछ मांगने के लिए आ रहा है। इससे पहले कि यह मेरे ऊपर किए उपकार का राजसभा में सबके सामने उल्लेख करे, मुझे इसे मरवा देना चाहिए। इसलिए उसने अपने अंगरक्षकों से कहा, "मालूम होता है, यह कोई ढोंगी साधु बुरे इरादे से यहां आया है। तुम इसकी मुश्कें कसकर, पीटते हुए नगर के बाहर मारने के स्थान पर ले जाकर इसका सिर काट डालो।"

राजा की आज्ञा पाकर जब राजकर्मचारी तपस्वी को मारते

और घसीटते हुए ले चले तो वह 'हाय मां! हाय बाप!'' कहकर बार-बार यही कहते, ''बुद्धिमानों ने ठीक ही कहा है कि किसी डूबते हुए आदमी को पानी से निकालने की अपेक्षा लकड़ी को निकालना लाख दर्जे अच्छा है।''

उन कर्मचारियों में एक पंडित भी था। उसने उत्सुकतावश पूछा, ''हे तपस्वी! क्या तूने हमारे राजा का कुछ उपकार किया है?''

तपस्वी ने सारी घटना उसे सुना दी।

तपस्वी की बात सुनकर क्षत्रिय, ब्राह्मण आदि पुरवासियों और राजकर्मचारियों ने सोचा, 'यह मित्र-घातक राजा जीवन-दान देनेवाले एक तपस्वी के साथ जब इस प्रकार बुरा व्यवहार कर पाप कमा रहा है तब भला हमारे राज्य की उन्नति कैसे हो सकती है? इससे राज्य का अमंगल होगा। अतएव इसका अंत कर देना चाहिए।' ऐसा विचार कर उस दुष्ट राजा की प्रजा विद्रोह पर उतारू हो गई और सबने मिलकर राजा पर हमला बोल दिया। तीर, तलवार और पत्थरों से उसे मारकर हाथी से नीचे गिरा दिया और उसकी लाश उठाकर खाई में फेंक दी। फिर सबने मिलकर तपस्वी का अभिषेक करके उन्हें राजा बना दिया।

वह धर्मपूर्वक राज्य करते हुए फिर एक दिन परीक्षा लेने की इच्छा से अपने अनुयायियों को लेकर सर्प के निवास-स्थान पर पहुंचे। सर्प ने प्रणाम करके सब धन उन्हें सौंप दिया। फिर वह उन्दूर के यहां गए। उसने भी उनका स्वागत कर प्रसन्नतापूर्वक अपना सारा ख़ज़ाना तपस्वी के हवाले कर दिया। फिर सब लोग मिलकर सुवा के निवास-स्थान पर आए।

सुवा ने अपने उपकारी को आया जान प्रणाम करके पूछा, "देव, शालि मंगवाऊं?"

"जब ज़रूरत होगी तब मंगवा लेंगे—अभी आओ, साथ चलो।" इस प्रकार कहकर सर्प, उन्दूर और सुवा के साथ करोड़ों सोने की मोहरें लेकर तपस्वी अपने राज्य में लौट आए।

उन्होंने तीनों के रहने की अच्छी व्यवस्था कर दी। सर्प के लिए सोने की बांबी, चूहे के लिए स्फटिक की गुफा और तोते के लिए हीरे-मोती जड़ा सोने का पिंजरा बनवा दिया। उन्हें सोने के कटोरों में भोजन परोसा जाता। इस प्रकार अपने अधीन प्रजा का पालन करते हुए और दान-पुण्य तथा धर्म में रत तपस्वी ने अनेक वर्ष राज्य किया और अपनी पूरी आयु भोगकर अन्त में वे परलोक सिधारे।

धन-जोड़ू और धन-ख़र्चीला

वाराणसी के पास एक कस्बे में एक जुलाहा रहता था। वह अपने काम में बहुत निपुण था। पर उसके बनाए मँहगे कपड़ों को केवल राजा-महाराजा ही ख़रीद सकते थे। इस कारण उसकी बिक्री अधिक नहीं होती थी। जिस-किस तरह से उसका गुज़ारा-भर हो पाता था।

एक दिन वह अपनी पत्नी से बोला, "जुलाहिन, देखो हमारे पड़ोसी भाई केवल गाढ़ा खद्दर बुनते हैं। ये लोग काम में भी इतने होशियार नहीं हैं तो भी इनकी आमदनी मुझसे चौगुनी है। इस गांव में कोई मेरे गुणों का ग्राहक नहीं है। अतएव मैं तो परदेस जाकर अपनी क़िस्मत आज़माने की सोच रहा हूं।"

इस प्रकार अपनी स्त्री को समझा-बुझाकर वह जुलाहा एक बड़े शहर में धनोपार्जन की इच्छा से आया। वहां आकर उसका व्यवसाय थोड़े ही दिनों में चमक उठा। उसके बनाए कपड़ों की सेठ-साहूकारों तथा राजा-महाराजाओं में खूब खपत हुई। तीन वर्ष तक उस शहर में रहकर उसने तीन सौ सोने की मोहरें जोड़ लीं। अब उसने सोचा कि घर चलना चाहिए। मैं अपनी जुलाहिन को जाकर जब इतना धन दूंगा तब वह



कितनी खुश होगी।

इस प्रकार मंसूबे बांधता हुआ वह अपने गांव की ओर चल दिया। उसे मार्ग में एक जंगल में रात पड़ गई। चोर-डाकुओं तथा हिंसक जानवरों के डर से वह एक पुराने बरगद के पेड़ पर चढ़ गया। यात्रा से थका-हारा वह कुछ देर में ही तने का सहारा लेकर सो भी गया।

रात को सपने में उसे दो व्यक्ति दिखाई दिए। उनमें से एक था कर्म, दूसरा था भाग्य। भाग्यदेव कर्मदेव से बोले, "कर्मदेव! तुम्हें तो मालूम है कि इस जुलाहे के भाग्य में केवल रोटी-कपड़ा-भर का सुख लिखा है, फिर भला तुमने इसे उठाकर तीन सौ सोने की मोहरें कैसे दिलवा दीं?"

कर्मदेव बोले, "भाग्यदेव! मेरा काम तो उद्यमी को उसकी मेहनत का फल देना है। जो प्रयत्न करेगा उसे उसका फल मिलना ही चाहिए। अब आगे जैसा तुम उचित समझो करो!"

कर्मदेव और भाग्यदेव का यह वार्तालाप सुन, जुलाहा हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने जल्दी-जल्दी अपनी थैली खोली, तो उसमें फूटी कौड़ी भी नहीं बची थी। यह देखकर जुलाहा कलपने लगा कि हाय कितनी मुश्किलों से तो धनोपार्जन किया और उसे जाते एक क्षण भी नहीं लगा। भला ख़ाली हाथ गांव जाकर मैं अपनी स्त्री और मित्रों को कैसे मुंह दिखाऊंगा?

यह सोचकर वह फिर उसी शहर में लौट आया और एक ही वर्ष में दुगुने परिश्रम से उसने पांच हज़ार मोहरें कमाकर जमा कर लीं। अब वह अपने गांव की ओर दूसरे मार्ग से चल दिया। परंतु होनहार देखो कि सूर्यास्त होने पर वह उसी बरगद के पेड़ के पास जा पहुंचा। यह देखकर जुलाहा बड़ा

ही हैरान हुआ कि हाय! देखो, लाख चेष्टा की, पर होनहार वहीं ले जाकर छोड़ता है जहां कुछ होने को होता है। इस बार भी उसी तरह उसकी मोहरें ग़ायब हो गईं।

दूसरी बार भी अपना सर्वस्व खोकर उसे बड़ी निराशा हुई। वह सोचने लगा, धन के बिना इस संसार में जीवन ही व्यर्थ है। यह विचार कर अपनी पगड़ी को पेड़ की टहनी में फंसाकर, उसके दोनों छोरों को बांधकर एक फंदा बनाया और जैसे ही वह गले में फांसी लगाने को तैयार हुआ, भाग्यदेव ने सामने आकर उसका हाथ पकड़ लिया और बोले, "अभी तुम्हारी आयु शेष है। तुम आत्मघात करने की चेष्टा मत करो। जाओ, तुम अपने घर जाओ। पर, मैं तुम्हें एक वरदान दूंगा, कहो तुम्हें क्या चाहिए?"

जुलाहा बोला, "अगर यह बात है तो आप मुझे धनवान बना दें।"

यह सुनकर भाग्यदेव बोले, "पर तुम धन लेकर भी क्या करोगे? धन का भोग तुम्हारे भाग्य में नहीं लिखा है।"

जुलाहा बोला, "तो भी मुझे धन चाहिए। इस संसार में कितने ऐसे धनी पुरुष हैं, जो अपनी अस्वस्थता या कंजूसी के कारण स्वयं धन का भोग करने में असमर्थ हैं, पर धनी होने के कारण उनका समाज में मान है।"

यह सुनकर भाग्यदेव बोले, "अगर ऐसी बात है तो तुम फिर शहर को लौट जाओ। वहां तुम्हें एक सौदागर के दो पुत्र मिलेंगे। उनमें से एक तो है धन-जोड़ू और दूसरा है धन-खर्चीला। तुम दोनों में से जिसकी तरह बनना पसंद करोगे, वैसा तुम्हें बना दिया जाएगा।"

यह कहकर भाग्यदेव अंतर्धान हो गए।

अब वह जुलाहा शहर आकर धन-जोड़ू का पता पूछता-पूछता एक गली में आया। गलीवालों से जब उसने पूछा, "भाई, यहां पर कोई धन-जोड़ू सौदागर पुत्र रहता है ?" तो एक बोला—"तुम परदेसी मालूम होते हो। सवेरे-सवेरे इस मनहूस का नाम सुन लिया, राम जाने आज रोटी भी नसीब होगी कि नहीं।"

जुलाहे ने सोचा, 'दीखता है, बड़ी बदनामी कमाई है इस धन-जोड़ू ने। ख़ैर, मैं खुद ही उसका घर ढूंढने की चेष्टा करता हूं।'

ढूंढते-ढूंढते जुलाहे को आख़िर में धन-जोड़ू का घर मिल ही गया। धन-जोड़ू की स्त्री, बच्चे और नौकर-चाकरों द्वारा दुत्कारे जाने पर भी जुलाहा उसके आंगन में जाकर बैठ गया। रात को साहूकार की स्त्री ने न चाहते हुए भी उसे भोजन करा दिया।

ख़ैर, रात को जुलाहा वहीं आंगन में सो गया। अब सपने में उसे फिर कर्मदेव और भाग्यदेव दिखाई दिए। भाग्यदेव ने कर्मदेव से पूछा, "कर्मदेव! इस धन-जोड़ू के भाग्य में तो पैसा ख़र्चना लिखा नहीं है। फिर इस जुलाहे को भोजन खिलवाकर तुमने यह फ़ालतू ख़र्च क्यों करवाया?"

कर्मदेव बोला, "भाग्यदेव! अब मैंने जो उचित समझा कर दिया, आगे तुम्हारी इच्छा, चाहे जिस तरह इस कमी को पूरा करो।"

बस, दूसरे दिन होनहार के वश होकर धन-जोड़ू बीमार पड़ गया और इस प्रकार उसे कई दिन तक फ़ाका करना पड़ा और भूखा-प्यासा जुलाहा भी वहां से धन-ख़र्चीले की खोज में चल दिया। उसकी गली में घुसते ही बच्चे-बच्चे के मुंह से

उसने दानी सौदागर की प्रशंसा सुनी। और वे उसे सौदागर-पुत्र के घर तक छोड़ आए।

धन-ख़र्चीले ने उसकी बहुत आवभगत की और उसे पेट भरकर भोजन खिलाया, नया जोड़ा वस्त्र पहनने को दिया और उसकी सुख-सुविधाओं का प्रबंध करके वह सोने चला गया।

अब रात को सपने में जुलाहे को फिर भाग्यदेव और कर्मदेव दिखाई दिए। भाग्यदेव कर्मदेव से बोले, "भाई कर्मदेव ! इस धन-ख़र्चीले ने तो जुलाहे की आवभगत में अपनी रही-सही पूंजी भी ख़र्च कर दी। अब कल इसका खाने-पीने का काम कैसे चलेगा?"

कर्मदेव बोले, "अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देना मेरा काम है, अब बिगड़ी बात बनानी तुम्हारे हाथ में है। कुछ भाग्य का चमत्कार दिखाओ।"

दूसरे दिन राजदरबार से एक कर्मचारी आया और धन-ख़र्चीले को राजा की ओर से रुपयों की एक थैली भेंट कर गया, क्योंकि उसने 'अकाल-पीड़ितों की बड़ी सेवा की थी'। यह देखकर जुलाहा सोचने लगा कि 'धन-जोड़ू के सदृश करोड़पति बनने से धन-ख़र्चीले के सदृश परोपकार करना और मस्त रहना लाख दर्जे अच्छा है, क्योंकि धन की सार्थकता उसके सद्व्यय में ही है। जिस धनी का धन किसी के काम न आवे, उससे तो निर्धन रहना अच्छा है। धर्म के आचरण करने से ही मनुष्य धर्मात्मा कहलाता है, केवल धर्मोपदेश पढ़ लेने मात्र से कोई धर्मात्मा नहीं बन जाता।' सब सोच-विचारकर जुलाहा बोला, "हे भाग्यदेवता, आप मुझे धन-ख़र्चीले सदृश धनी बना दें तो अच्छा है, मुझे धन-जोड़ू

के जीवन में कुछ सार्थकता नहीं प्रतीत होती।"

जुलाहे की इच्छानुसार भाग्यदेवता ने उसे धन-ख़र्चीले के सदृश धनी बना दिया। वह गांव लौट आया, यहां उसका धंधा खूब चमक गया, पर साथ-ही-साथ वह जितना कमाता उतना ही परोपकार में उड़ा भी देता था। इस प्रकार वह चाहे धन न बटोर सका हो पर उसने यश खूब बटोर लिया। इसी में जुलाहा और जुलाहिन संतुष्ट थे।

●●●

देश-विदेश की सचित्र लोककथाएं

हिमाचल की लोककथाएं
बिहार की लोककथाएं
राजस्थान की लोककथाएं
बंगाल की लोककथाएं (पुरस्कृत)
हरियाणा की लोककथाएं (पुरस्कृत)
पड़ोसी देशों की लोककथाएं
असम की लोककथाएं
पंजाब की लोककथाएं
मध्यप्रदेश की लोककथाएं
उत्तर प्रदेश की लोककथाएं

प्रेमचन्द की सरल, सचित्र बाल कहानियां

बूढ़ी काकी
बड़े घर की बेटी
सुजान भगत
परीक्षा
शतरंज के खिलाड़ी
दो बैलों की कथा
मां की ममता
शिकारी राजकुमार
गुल्ली-डण्डा
रानी सारंधा
नमक का दरोगा
रामलीला
पंच परमेश्वर
मन्दिर
ईद का त्योहार
सबसे बड़ा तीर्थ
कुत्ते की कहानी
मेरी कहानी
रामकथा
जंगल की कहानियां

रवीन्द्रनाथ टैगोर की सरल बाल-कहानियां

भोला राजा
काबुलीवाला
पारसमणि
मास्टरजी
तोते की कहानी
राजा का न्याय

राजपाल

ISBN 81-7028-331-9